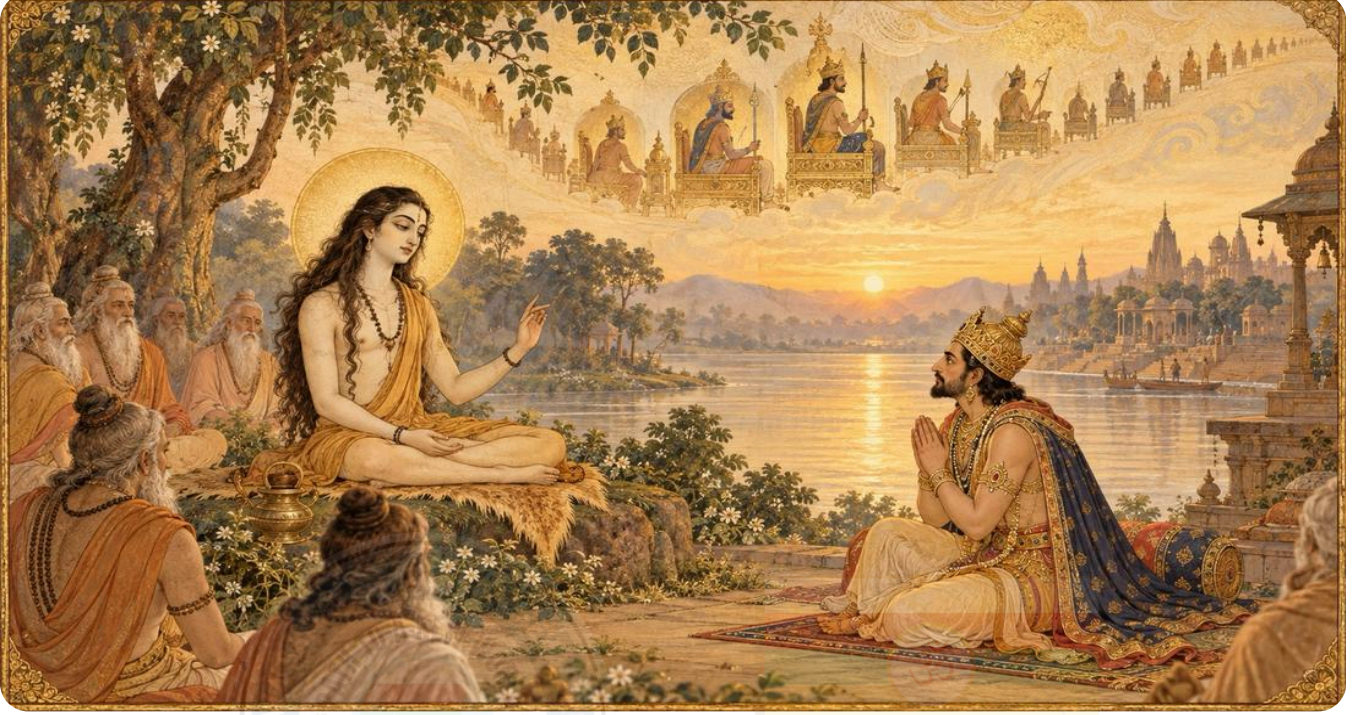


श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 12 अध्याय 1: कलियुग के पतित राजवंश

13 September 2026



श्रीकृष्ण के अपने धाम को प्रस्थान करने के पश्चात्, राजा परीक्षित पूछते हैं कि अब पृथ्वी पर कौन राज्य करेगा — और श्रीशुकदेव उनके समक्ष कलियुग के राजाओं की सम्पूर्ण दीर्घ शृंखला खोलकर रख देते हैं, एक के बाद एक वंश, तरंगों की भाँति उठते और गिरते, जब तक कि केवल म्लेच्छ शासक शेष रह जाते हैं और धर्म स्वयं क्षीण हो जाता है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

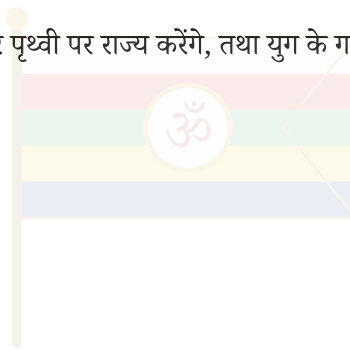
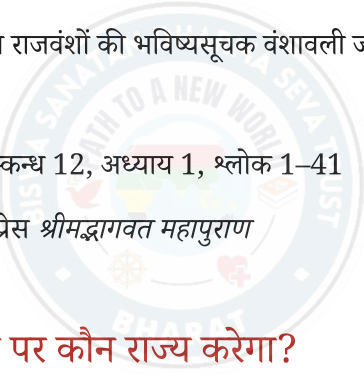
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विङ्गम में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। अब हम द्वादश एवं अन्तिम स्कन्ध के प्रथम अध्याय तक पहुँचते हैं — वह स्कन्ध जिसमें यह महान् शास्त्र अपने शेष सूत्रों को समेटकर समापन की ओर ले चलता है। श्रीशुकदेव, अब भी गंगा के तट पर राजा परीक्षित के समक्ष विराजमान, अपनी भविष्यदृष्टि को आगे काल की ओर मोड़ते हैं। भगवान् के दिव्य अवतारों तथा असंख्य राजाओं और ऋषियों के इतिहास का वर्णन कर चुकने के पश्चात्, वे एक सरल प्रश्न का उत्तर एक विशाल दर्शन से देते हैं: श्रीकृष्ण के अपने धाम लौट जाने पर, इस पृथ्वी को कौन धारण करेगा? इसका उत्तर है अजन्मे वंशों की एक लम्बी नामावली — प्रद्योतन, शिशुनाग, नन्द, मौर्य, शुंग, कण्व, आन्ध्र तथा और भी अनेक — मुकुटों की एक नदी जो हाथ-दर-हाथ बहती जाती है, प्रत्येक

शासन पिछले से छोटा और अन्धकारमय, जब तक कि अध्याय कलियुग के म्लेच्छ राजाओं के एक निर्भीक चित्रण के साथ समाप्त नहीं हो जाता। यह इतिहास है जो घटित होने से पहले ही कहा गया है, और इसका उद्देश्य निरर्थक भविष्यवाणी नहीं, अपितु एक दर्पण है: आत्मा को यह दिखाना कि प्रत्येक पार्थिव सिंहासन कितना क्षणभंगुर है।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 12 (द्वादश स्कन्ध — अन्तिम स्कन्ध)
- अध्याय: 1 (प्रथम अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: कलियुग के पतित राजवंश
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को सम्बोधित करते हुए; बाहरी कथा-सूत्र सूत गोस्वामी का है, जो ऋषि शौनक तथा नैमिषारण्य की सभा को यह सुनाते हैं
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित; तथा नैमिषारण्य के ऋषिगण जो सूतजी से सुनते हैं
- मुख्य स्थान: गंगा का तट, जहाँ परीक्षित सात दिनों में अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे हैं; जो नैमिषारण्य के वन-आश्रम के भीतर कथित है
- मुख्य विषय-वस्तु: उन राजवंशों की भविष्यसूचक वंशावली जो कलियुग भर पृथ्वी पर राज्य करेंगे, तथा युग के गहराने के साथ राजत्व का नैतिक पतन
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 12, अध्याय 1, श्लोक 1–41
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण



प्रश्न: कृष्ण के जाने पर कौन राज्य करेगा?

राजा परीक्षित, जिन्होंने बिना अन्न-जल और निद्रा के सम्पूर्ण भागवत श्रवण की है, अब एक ऐसा प्रश्न पूछते हैं जो चुपचाप सम्पूर्ण आगामी युग का भार वहन करता है। जब श्रीकृष्ण, यदुकुल के रत्न, अपने स्वर्गीय धाम को प्रस्थान कर गए, तब किसका वंश पृथ्वी पर शासन करने आया?

श्रीशुक उवाच

योऽन्त्यः पुरञ्जयो नाम भविष्यो बारहद्रथः ।

तस्यामात्यस्तु शुनको हत्वा स्वामिनमात्मजम् ॥ १ ॥

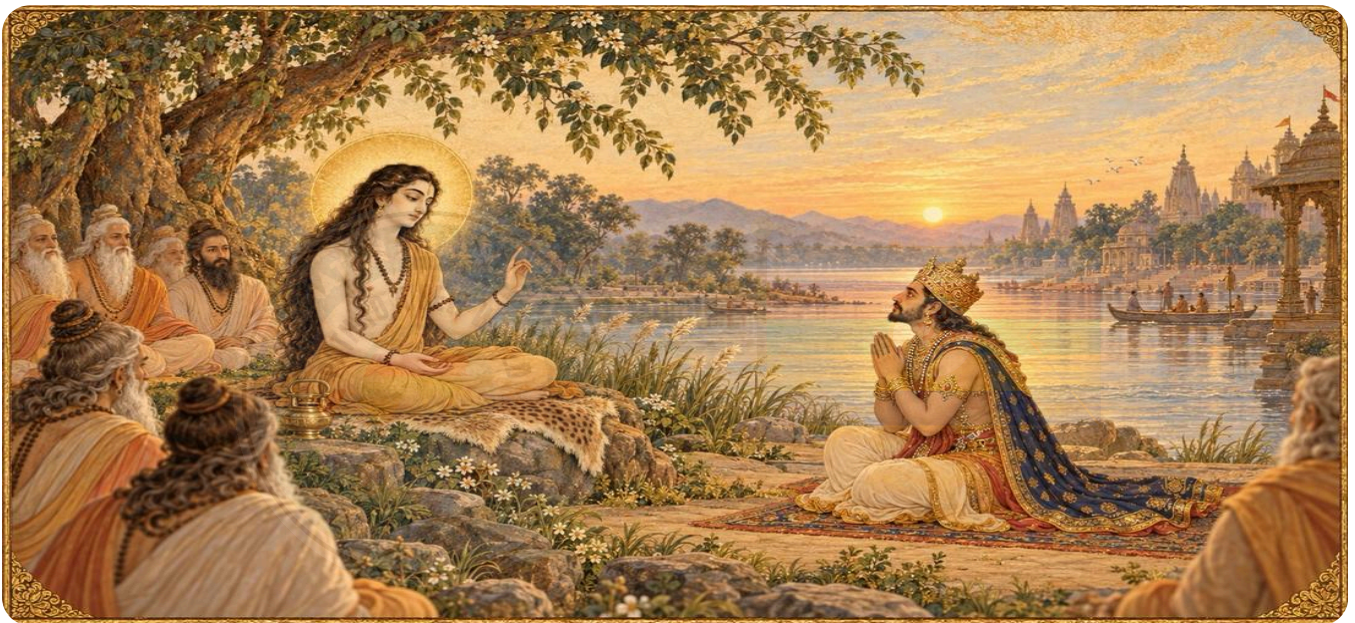
śrī-śuka uvāca yo 'ntyaḥ purañjayo nāma bhaviṣyo bārahadrathaḥ tasyāmātyas tu śunako hatvā svāminam ātma-jam

अर्थ: श्रीशुक ने कहा: बृहद्रथ-वंश का अन्तिम राजा पुरञ्जय नामक होगा; उसका अपना ही मन्त्री शुनक अपने स्वामी की हत्या करके अपने पुत्र को राजा बना देगा। (स्कन्ध 12, अध्याय 1, श्लोक 1)

श्रीशुकदेव केवल एक उत्तराधिकारी का नाम नहीं लेते। वे वंश-दर-वंश, राजत्व के सम्पूर्ण भविष्य को खोलने लगते हैं — एक ऐसी भविष्यवाणी जो नामों के एक चिट्ठे की भाँति पढ़ी जाती है, प्रत्येक राजा अगले को जन्म देता, प्रत्येक शृंखला उठती और फिर मार्ग छोड़ती। सबसे पहला स्वर जो गूँजता है, वह विश्वासघात का है: एक विश्वासपात्र मन्त्री अपने स्वामी की हत्या करता हुआ। यह कलियुग की, जिसमें महत्वाकांक्षा प्रायः निष्ठा पर विजय पा लेती है, एक उपयुक्त प्रस्तावना है।

प्रथम राजवंश: प्रद्योतन और शिशुनाग

उसी प्रथम विश्वासघात से प्रद्योतन वंश उत्पन्न होता है — प्रद्योत से आरम्भ होकर पाँच राजा, जो एक सौ अड़तीस वर्ष पृथ्वी पर राज्य करेंगे। उनके पश्चात् शिशुनाग आते हैं: शिशुनाग और उनके वंशज काकवर्ण, क्षेमधर्मा, क्षेत्रज्ञ, विधिसार, अजातशत्रु, दर्भक, अजय, नन्दिवर्धन तथा महानन्दी — दस राजा जो तीन सौ साठ वर्ष पृथ्वी को धारण करेंगे।



गंगा के तट पर श्रीशुकदेव के समक्ष विराजमान राजा परीक्षित पूछते हैं कि श्रीकृष्ण के अपने शाश्वत धाम को लौट जाने पर पृथ्वी पर कौन राज्य करेगा (श्लोक 1)।

तब श्रीशुकदेव महानन्दी के पुत्र की बात कहते हैं, जो एक शूद्रा स्त्री से उत्पन्न होगा, एक निश्चित नन्द जो विशाल सेना और अकूत सम्पदा का स्वामी होगा। यह महापद्म नन्द है, और उसके साथ राजत्व का स्वरूप बदल जाता है। इस बिन्दु से आगे, श्रीशुकदेव स्पष्ट कहते हैं, मनुष्यों के शासक अधिकांशतः शूद्र वर्ग के तथा बहुधा अधर्मी होंगे — यह एक शान्त संकेत है कि पवित्र क्षत्रिय-व्यवस्था विघटित होने लगी है।

नन्द, मौर्य और मुकुटों की दीर्घ शृंखला

एक दूसरे परशुराम की भाँति, महापद्म सम्पूर्ण भूमण्डल को एक ही राजदण्ड के अधीन ले आएगा, और कोई भी उसकी आज्ञा का उल्लंघन करने का साहस नहीं करेगा। वह और उसके आठ पुत्र — नौ नन्द — लगभग सौ वर्ष राज्य करेंगे। तब एक निश्चित ब्राह्मण, जो चाणक्य के रूप में स्मरण किया जाता है, सभी नौ नन्दों को उखाड़ फेंकेगा और चन्द्रगुप्त को सिंहासन पर बैठाएगा। इस प्रकार मौर्य वंश आरम्भ होता है: चन्द्रगुप्त, उसका पुत्र, फिर अशोकवर्धन तथा उसके वंशज — दस मौर्य राजा जो एक सौ सैंतीस वर्ष राज्य करेंगे।



कलियुग भर एक वंश दूसरे को स्थान देता जाता है — प्रद्योतन, शिशुनाग, नन्द तथा मौर्य, प्रत्येक उठता है, अपने नियत काल तक राज्य करता है, और चला जाता है, जैसे तट पर एक के बाद एक आती तरंगें (श्लोक 2-15)।

यह शृंखला बिना रुके चलती रहती है। शुंग-कुल का एक मौर्य सेनापति पुष्यमित्र अन्तिम मौर्य की हत्या करके स्वयं सत्ता हथिया लेगा; दस शुंग एक शताब्दी से अधिक राज्य करेंगे। तब पृथ्वी कण्व राजाओं के पास चली जाएगी — कण्व-वंश का वासुदेव तथा उसके उत्तराधिकारी — जो तीन सौ पैंतालीस वर्ष राज्य करेंगे। अन्तिम कण्व का एक सेवक, आन्ध्र-जाति का बलि नामक एक शूद्र, फिर सिंहासन हथिया लेगा, और आन्ध्र वंश के तीस राजकुमार चार सौ छप्पन वर्ष राज्य करेंगे। उनके पश्चात् श्रीशुकदेव और भी नाम गिनाते हैं: सात आभीर, दस गर्दभी, सोलह कंक, आठ यवन, चौदह तुरुष्क, दस गुरुन्द तथा ग्यारह मौल — विदेशी तथा मिश्रित शासक जो अपने बीच अनेक शताब्दियों तक पृथ्वी को धारण करेंगे, जिनके पश्चात् किलिकिला के राजा तथा तेरह बाह्लीक आते हैं, जो सब अपने-अपने बिखरे प्रदेशों पर एक ही समय राज्य करेंगे।

जब राजा म्लेच्छ बन जाते हैं

भविष्यवाणी अपने अन्त तक पहुँचते-पहुँचते श्रीशुकदेव का स्वर गम्भीर हो जाता है, क्योंकि कलियुग जितना गहरा उतरता है, राजत्व स्वयं उतना ही क्षय होता जाता है। वे ऐसे शासकों का वर्णन करते हैं जो म्लेच्छों से बेहतर नहीं होंगे — ऐसे मनुष्य जिन्होंने हर संस्कारक क्रिया त्याग दी है, असत्य, क्रूरता और क्रोध के वशीभूत।

स्त्रीबालगोद्विजघ्नाश्च परदारधनादृताः ।

उदितास्तमितप्राया अल्पसत्त्वाल्पकायुषः ॥ ३९ ॥

strī-bāla-go-dvija-ghnās ca para-dāra-dhanādṛtāḥ uditāsta-mita-prāyā alpa-sattvālpakāyusaḥ

अर्थ: वे स्त्रियों, बालकों, गौओं तथा ब्राह्मणों का वध करेंगे, और दूसरों की स्त्रियों तथा धन का लोभ करेंगे; उनका भाग्य शीघ्रता से उठेगा और अस्त होगा, और वे अल्प बल तथा अल्पायु के होंगे। (स्कन्ध 12, अध्याय 1, श्लोक 39)



ज्यों-ज्यों कलियुग गहराता है, राजत्व क्षीण होता जाता है: शासक हर पवित्र क्रिया त्याग देते हैं, रजस् और तमस् के वशीभूत होकर उन्हीं प्रजाजनों पर अत्याचार करते हैं जिनकी रक्षा उन्हें करनी चाहिए (श्लोक 38-42)।

ये राजा, श्रीशुकदेव कहते हैं, मात्र क्षत्रिय के वेश में म्लेच्छ, अपनी ही प्रजा को निगल जाएँगे। और सबसे शोकपूर्ण है अध्याय का अन्तिम स्वर: स्वयं प्रजा, ऐसे मनुष्यों द्वारा शासित होकर, अपने शासकों की आदतों, आचरण तथा वाणी का अनुकरण करने लगेगी और — एक-दूसरे से तथा अपने राजाओं से पीड़ित होकर — साथ ही विनाश की ओर सरक जाएगी।

तन्नाथास्ते जनपदास्तच्छीलाचारवादिनः ।

अन्योन्यतो राजभिश्च क्षयं यास्यन्ति पीडिताः ॥ ४१ ॥

tan-nāthās te janapadās tac-chīlācāra-vādināḥ anyonyato rājabhiś ca kṣayaṁ yāsyanti pīḍitāḥ

अर्थ: ऐसे राजाओं से शासित प्रजा उनके स्वभाव, आचरण तथा वाणी को अपना लेगी और — एक-दूसरे से तथा अपने शासकों से पीड़ित होकर — अपने विनाश को प्राप्त होगी। (स्कन्ध 12, अध्याय 1, श्लोक 41)



पतित राजाओं की प्रजा अपने शासकों की आदतों तथा वाणी का अनुकरण करने लगती है, और चारों ओर से पीड़ित होकर सम्पूर्ण समाज क्षय की ओर बहता जाता है —
गहराते युग के समक्ष रखा गया एक दर्पण (श्लोक 41)।

इस अध्याय की मुख्य शिक्षाएँ

1. प्रत्येक पार्थिव सिंहासन क्षणिक है। सम्पूर्ण अध्याय अनित्यता पर एक चिन्तन है: एक के बाद एक बलशाली वंश उठता है, अपने नियत काल तक राज्य करता है, और लुप्त हो जाता है। जो धारण करने वालों को स्थायी प्रतीत होता है, वह ऋषि की उच्चतर दृष्टि से केवल एक बहती तरंग है (श्लोक 1-35)।
2. नेताओं का चरित्र प्रजा का चरित्र गढ़ता है। श्रीशुकदेव के अन्तिम श्लोक स्पष्ट कर देते हैं कि जब शासक धर्म त्याग देते हैं, तो प्रजा उनका अनुसरण करती है, जब तक कि सम्पूर्ण समाज एक साथ क्षय न हो जाए। नेतृत्व कभी निजी विषय नहीं होता (श्लोक 40-41)।
3. कलियुग का पतन क्रमिक है, अकस्मात् नहीं। भविष्यवाणी एक धीमी ढलान का अंकन करती है — श्रेष्ठ क्षत्रियों से, शूद्र राजाओं तक, मिश्रित एवं विदेशी शासकों तक, उन मनुष्यों तक जो नाम-मात्र को छोड़कर म्लेच्छ हैं। इस प्रतिमान को पहचानना ही एक आध्यात्मिक सुरक्षा है (श्लोक 8-42)।
4. भविष्यवाणी भी वैराग्य की सेविका है। श्रीशुकदेव यह वंशावली जिज्ञासा शान्त करने के लिए नहीं, अपितु परीक्षित के — तथा हमारे — शक्ति और सम्पत्ति के परिवर्तनशील संसार के प्रति आसक्ति को शिथिल करने के लिए सुनाते हैं, हृदय को उसी ओर मोड़ते हुए जो अकेला शाश्वत है (सम्पूर्ण अध्याय)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

उन राजाओं की सूची पढ़ने में कुछ विनम्र कर देने वाला है, जिनके साम्राज्य कभी पृथ्वी को भर देते प्रतीत होते थे, और जो अब एक ऋषि की भविष्यवाणी में मुश्किल से स्मरण किए जाने वाले नाम-मात्र हैं। उनमें से प्रत्येक ने, अपने समय में, विश्वास किया होगा कि उसका शासन चिरस्थायी होगा; प्रत्येक निश्चित था कि उसका सिंहासन ठोस भूमि है। फिर भी श्रीशुकदेव उन्हें ऐसे गिनाते हैं जैसे कोई माला के मनकों को गिनता है — एक के बाद एक, कोई ठहरता नहीं। सात दिनों में मृत्यु का सामना कर रहे एक राजा के लिए, यह दर्शन विचित्र रूप से

मुक्तिदायक है। यह कहता है: तुम अकेले मृत्यु द्वारा नहीं चुने गए हो; बलशालियों की सम्पूर्ण शोभायात्रा उसी मार्ग पर चलती है जिस पर अब तुम चल रहे हो। अन्तर केवल इतना है कि कोई उस मार्ग पर पहले से ही फिसलते मुकुट को थामे हुए चले, या भगवान् के नाम को अधरों पर लेकर। वंश उठते और गिरते हैं; कृष्ण की शरण अकेली नहीं हिलती। यही वह स्थिर बिन्दु है जिसके चारों ओर राजाओं का यह घूमता चक्र घूमता है, और यही वह बिन्दु है जिसकी ओर यह अन्तिम स्कन्ध हमें धीरे-धीरे ले चलेगा।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, किसी एक ऐसी वस्तु का स्मरण करें जिसे आप चुपचाप स्थायी मानते आ रहे हैं — कोई पद, कोई सम्पत्ति, भविष्य की कोई योजना। बिना किसी चिन्ता के, बस यह स्वीकार करें कि वह भी उठती और अस्त होती वस्तुओं की उसी बहती शोभायात्रा से सम्बन्धित है। फिर, जैसे परीक्षित ने किया, उसकी ओर मुड़ें जो नहीं जाता: कुछ मिनट बैठकर, ध्यानपूर्वक, धीरे-धीरे दोहराएँ — “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।” संसार की अनित्यता को भय का स्रोत नहीं, अपितु उस एकमात्र शरण की ओर एक कोमल प्रेरणा बनने दें जिसे कोई वंश और कोई युग हिला नहीं सकता।

उपसंहार

द्वादश स्कन्ध का प्रथम अध्याय भागवत के अन्तिम प्रवाह का आरम्भ एक ऐसी भविष्यवाणी से करता है जो एक शिक्षा भी है। कृष्ण के प्रस्थान के पश्चात् कौन राज्य करेगा — परीक्षित के इस सरल प्रश्न का उत्तर देते हुए श्रीशुकदेव पार्थिव शक्ति का सम्पूर्ण भविष्य उघाड़ देते हैं — वंशों की एक लम्बी, अखण्ड शृंखला, प्रत्येक महत्त्वाकांक्षा में उठता और काल में विलीन होता, जब तक कि राजत्व स्वयं कलि की गहराइयों में अन्धकारमय न हो जाए। फिर भी ऋषि का उद्देश्य भयभीत करना नहीं, अपितु मुक्त करना है। यह दिखाकर कि प्रत्येक मुकुट कितना नितान्त क्षणभंगुर है, वे मरणासन्न राजा के — तथा हमारे — हृदय को संसार की चंचल रेत से हटाकर भगवान् की अपरिवर्तनीय शरण की ओर मोड़ देते हैं। इस अन्तिम स्कन्ध के आरम्भ होते ही हमें चुपचाप स्मरण कराया जाता है कि इतिहास के भव्यतम सिंहासन जल पर तैरते फेन-मात्र हैं, जबकि कृष्ण का नाम वह तट है जो नहीं हिलता।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (सम्पूर्ण), द्वादश स्कन्ध, प्रथम अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़डम • बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ॰ श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-skandh-12-adhyay-1-kaliyug-ke-patit-rajvansh-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

